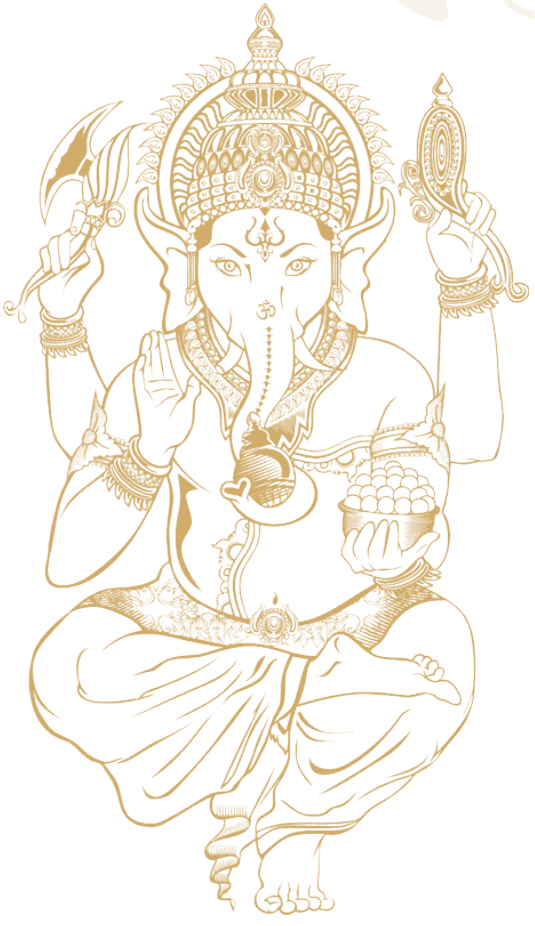

Mr.Aditi varma

10 Oct 2023

02:09 AM

Muzaffarnagar

Model: Baby-Horoscope **Order No: 120475001**

तिथि 10/10/2023 **समय** 02:09:00 **वार** मंगलवार **स्थान** Muzaffarnagar **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:11:13
अक्षांश 29:28:00 उत्तर **रेखांश** 77:42:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:19:12 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	03:02:37 घं
वेलान्तर	00:12:53 घं
सूर्योदय	06:16:49 घं
सूर्यास्त	17:55:58 घं
चैत्रादि संवत	2080
शक संवत	1945
मास	आश्विन
पक्ष	कृष्ण
तिथि	11
नक्षत्र	आश्लेषा
योग	साध्य
करण	बालव

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	मार्जार
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	श्वान
युँजा	मध्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	डो-डौली
पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-रजत
होरा	शनि
चौघड़िया	चर

विंशोत्तरी

बुध 2वर्ष 3मा 3दि

बुध

10/10/2023
12/01/2026

	00/00/0000	भद्रिका 30/12/2024
	00/00/0000	उल्का 31/10/2025
	00/00/0000	सिद्धा 21/10/2026
	00/00/0000	संकटा 01/12/2027
	00/00/0000	मंगला 21/01/2028
	00/00/0000	पिंगला 01/05/2028
	10/10/2023	धान्या 30/09/2028
शनि	12/01/2026	भ्रामरी 21/04/2029

योगिनी

भ्रामरी 0वर्ष 6मा 11दि

भद्रिका

21/04/2024
21/04/2029

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			27:22:49	कर्क	आश्लेषा	4	बुध	गुरु	---	0:00			
सूर्य			22:06:17	कन्या	हस्त	4	चंद्र	शुक्र	सम राशि	0.94	अमात्य	पितृ	प्रत्यारि
चंद्र			28:13:38	कर्क	आश्लेषा	4	बुध	शनि	स्वराशि	1.55	आत्मा	मातृ	जन्म
मंगल		अ	04:15:19	तुला	चित्रा	4	मंगल	शुक्र	सम राशि	1.35	कलत्र	भ्रातृ	साधक
बुध		अ	14:24:12	कन्या	हस्त	2	चंद्र	गुरु	उच्च राशि	1.00	मातृ	ज्ञाति	प्रत्यारि
गुरु	व		19:23:44	मेष	भरणी	2	शुक्र	राहु	मित्र राशि	1.02	भ्रातृ	धन	विपत
शुक्र			06:30:31	सिंह	मघा	2	केतु	राहु	शत्रु राशि	1.50	ज्ञाति	कलत्र	सम्पत
शनि	व		06:52:05	कुंभ	शतभिषा	1	राहु	राहु	मूलत्रिकोण	1.53	पुत्र	आयु	वध
राहु	व		00:44:48	मेष	अश्विनी	1	केतु	केतु	शत्रु राशि		---	ज्ञान	सम्पत
केतु	व		00:44:48	तुला	चित्रा	3	मंगल	बुध	सम राशि		---	मोक्ष	साधक

लग्न-चलित

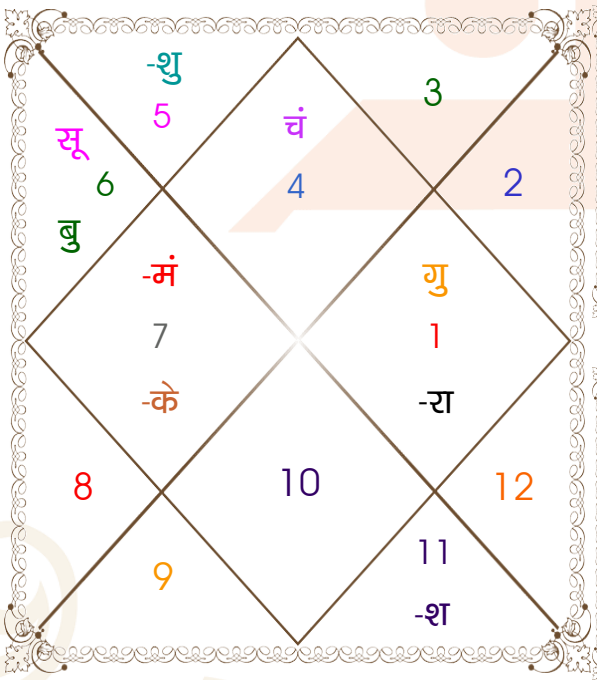

चन्द्र कुंडली

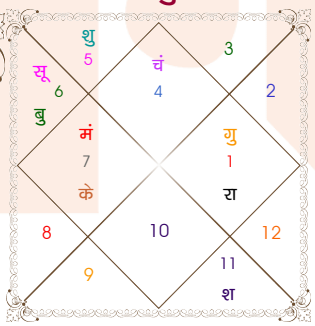

नवमांश कुंडली

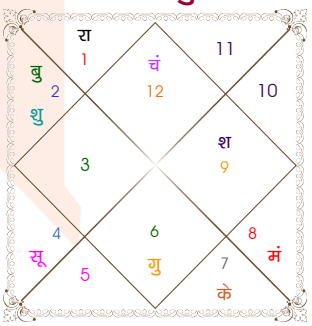

सर्वाष्टकवर्ग

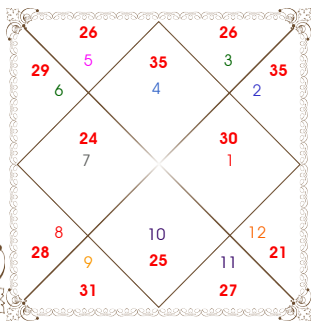

दशमांश कुंडली

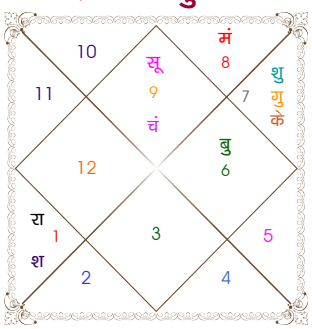

Acharya Ashok Shukla Vedpathi Shiva Shiv Astrology Research Centre
Brahmavidyapeeth Shukatirtha
9897180017
ashok.shukla.mzn@gmail.com

नक्षत्रफल

आपका जन्म आश्लेषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में हुआ हैं। अतः आपकी योनि मार्जार, वर्ग श्वान, वर्ण विप्र, गण राक्षस तथा नाड़ी अन्त्य होगी। आपकी जन्म राशि कर्क तथा राशि स्वामी चन्द्रमा होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का आद्याक्षर "डो" अक्षर से प्रारम्भ होगा।

आश्लेषा नक्षत्र की गणना गण्डमूल नक्षत्र के अर्न्तगत की जाती हैं। चूंकि आप इस नक्षत्र के चतुर्थ चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आप पिता के लिए कष्टकारी होंगी। इसलिए जन्म समय में इस नक्षत्र की शान्ति पूर्ण शास्त्रीय विधि विधान से किसी योग्य विद्वान द्वारा अवश्य करा लेनी चाहिए जिससे अशुभ फलों का प्रभाव खत्म या न्यून हो सके। इसके लिए इस नक्षत्र के कम से कम 28000 जप करने चाहिए तथा 27 दिन बाद जब पुनः यह नक्षत्र आये तो जपे हुए मत्रों के दशांश का हवन करना चाहिए।

मंत्र – ऊँ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु।
ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।।

अर्थात आश्लेषा नक्षत्र में पैदा हुआ मनुष्य स्वस्थ शरीर वाला, माता पिता का भक्त, अपने धर्म में आस्था रखने वाला, नम्र, लोक में मान्य तथा धनवाहन आदि के सुख से परिपूर्ण होता है।

आप यात्रा तथा भ्रमण करने में अपने अधिकांश समय को व्यतीत करेंगी तथा कठोर कार्यों को सम्पन्न करेंगी। आप अपने इन कठोर चेष्टाओ से अन्य जनों को भी दुःखी करेंगी। आप धनाभाव से ग्रस्त नहीं रहेंगी परन्तु अपने अर्जित धन को भी अनावश्यक कार्यों पर व्यय करेंगी। साथ ही विलासिता प्रबलता से भी आप युक्त रहेंगी।

वृथाटनः स्यादितिदुष्टचेष्टः कष्टप्रदाश्चापि वृथा जनानाम्।
सर्पि सदर्थोहि वृथार्पितार्थः कन्दर्पसंतप्तमना मनुष्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् आश्लेषा नक्षत्र में उत्पन्न जातक व्यर्थ घूमने वाला, दुष्ट प्रकृति से लोगों को कष्ट देने वाला, अपने उत्तम धन को वुरे कर्मो में खर्च करने वाला, विलासी तथा कामातुर रहता है।

दूसरे लोगों की सुन्दर वस्तुओं के प्रति आप आकषित रहेंगी। शरीर से भी आप स्वस्थ ही रहेंगी। अन्य लोगों के द्वारा उपकृत होने पर आप उनका उपकार अल्प ही मानेंगी। आप पूर्व कृत कार्यों को भी करने वाली होंगी।

लुब्धः खञ्जः कृशाङ्गश्च पुनः पुनः।
आश्लेषायां समुद्भूतः कृतकर्मा भविष्यति।।

अर्थात आश्लेषा में जन्मा मनुष्य लोभी, लंगडा, कमजोर शरीर वाला, कृतघ्न तथा किये गये कार्यो को करने वाला होता है।

खाने में भक्ष्याभक्ष्य का आप कोई भेद नही रखेंगी तथा एक प्रकार से सर्वभक्षी होंगी अर्थात सात्विक या तामसिक जो भी मिला उसे खाने की इच्छा करेंगी। आप कभी कभी कठोरकर्मो को भी सम्पन्न करेंगी। इसलिए सामाजिक जनों से आपका वैमनस्य भी रहेगा। अवसर के अनुसार आप कभी कभी मिथ्या भाषण का भी जीवन में आश्रय ले सकती हैं।

सर्वभक्षी कृतान्तश्च कृतघ्नो वञ्चकः खलः।
आश्लेषायां नरो जातः कृतकर्मा हि जायते।।
मानसागरी

अर्थात आश्लेषा में पैदा हुआ बालक सर्वभक्षी, कार्यकर्ता, कृतघ्न, ठग, दुर्जन तथा किये हुए कार्यो को करने वाला होता है।

आपकी ज्ञान प्राप्ति में रूचि अल्प मात्रा में ही रहेगी अतः बुद्धि भी मध्यम ही रहेगी। आपको क्रोध भी अधिक ही आएगा तथा आचरण से भी आप सामान्य ही होंगी। आपके अधिकांश कार्य कठोरता से युक्त रहेंगे। समाज से आपको सम्मान तथा सहानुभूति मिलती रहेगी।

सार्पे मूढ़मतिः कृतघ्नवचनः पापी दुराचार वान।
जातक परिजातः

अर्थात् आश्लेषा में उत्पन्न जातक मूढ़मति कृतघ्नतापूर्ण वाणी बोलने वाला, क्रोधी तथा दुराचारी होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ हैं। यद्यपि स्वर्णपाद में उत्पन्न जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते हैं। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता है। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनों से भी हीन रहता हैं। सांसारिक कार्यो में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता अर्जित होती है। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्यधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती है चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित हैं। अतः आपके लिए यह स्वर्ण पाद विशेष अशुभ नहीं रहेगा। अपितु आपके लिए अधिकांश रूप से शुभ ही रहेगा। अतः आपका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय एवं आकर्षक रहेगा। आप उदार स्वभाव की महिला होंगी तथा सभी लोगों के प्रति आपके मन में दया का भाव विद्यमान रहेगा। जीवन में सर्वप्रकार के सुख तथा धन सम्पत्ति से आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इसका उपभोग करेंगी। साथ ही विविध प्रकार के ऐश्वर्य एवं वैभव से भी आप युक्त रहेंगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।आप एक चतुर तथा बुद्धिमता महिला होंगी तथा अपने समस्त कार्यो को चतुराई तथा बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगी।

साथ ही विभिन्न प्रकार के सद्गुणों से भी आप सुशोभित रहेंगी।

कर्क राशि में जन्म लेने के कारण आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। आप अपने सभी कार्यों को चतुराई के साथ सम्पन्न करेंगी। साथ ही धन का भी आपके पास अभाव नहीं रहेगा इससे हमेशा युक्त रहकर धनवान कहलाएंगी। समाज तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में आप शीघ्र सफलता प्राप्त करेंगी। धर्म में आपकी पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा नियमपूर्वक धर्म का पालन करने में हमेशा प्रयत्नशील रहेंगी। आप अपने श्रेष्ठ संबंधियों तथा गुरूजनों की प्रिय तथा स्नेह की पात्र रहेगी तथा सभी से आपको पूर्ण सहयोग की प्राप्ति होगी। आप अत्यन्त ही बुद्धिमती होंगी तथा अपनी बुद्धिमता से अनेक कार्यों में सफलता अर्जित करेंगी। यदा कदा आप में क्रोध की भी बहुलता दृष्टिगोचर होगी एवं कभी कभी आप अपने को अत्यन्त दुःखी तथा निराश अनुभव करेंगी। आप अच्छे मित्रों से भी सुशोभित रहेंगी तथा अन्य कार्यों को भी जानने वाली होंगी। आपके शरीर में बल का भी अभाव रहेगा तथा अपने घर से अन्यत्र कहीं जाकर प्रवास करेंगी।

कार्यकारी धनीशूरो धर्मिष्ठो गुरूवत्सलः।
शिरो रोगी महाबुद्धिः कृशाङ्गः कृत्यवित्तमः।।
प्रवासशीलः कोपाढ्योडबलो दुःखी सुमित्रकः।
अनासक्तो गृहे वक्रः कर्कराशौ भवेन्नरः।।

मानसागरी

आप वात तथा कफ मिश्रित प्रकृति वाली होंगी तथा आपका सौन्दर्य अत्यन्त ही आकर्षक एवं दर्शनीय होगा। आप स्वयं धनार्जन करने में पूर्ण सफलता प्राप्त करेंगी तथा विपुल धन से युक्त होकर धनाढ्य कहलाएंगी। ब्राहमण तथा देवताओं में आपकी पूर्ण आस्था रहेगी तथा अवसरानुकूल इनकी सेवा तथा पूजा करने हेतु यत्नशील रहेंगी। श्रेष्ठकुल में उत्पन्न लोगों के प्रति आपके मन में असीम सेवा तथा सहयोग का भाव रहेगा। इनकी सेवा करके तथा उन्हें सहयोग प्रदान करके आप अत्यन्त शान्ति की अनुभूति करेंगी।

पवनकफशरीरो देव संकाश रूपः।
स्वयमुपचित्तवित्तो देवताविप्रभक्तः।।
कुलजन परिसेवी मण्डलाकार मध्ये।
भवति विपुलवित्तः कर्कटौ यस्यराशिः।।

जातक दीपिका

वेदादिशास्त्रों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए आप रूचिशील रहेंगी तथा परिश्रम से इनका ज्ञान प्राप्त करेंगी साथ ही अन्य कलाओं के विषय में भी आपको पूर्ण ज्ञान रहेगा। आपका आचरण श्रेष्ठ तथा अन्य जनों के लिए अनुकरणीय होगा। आपको फूलों की सुगन्ध तथा जल में क्रीड़ा करने से प्रसन्नता की अनुभूति होगी। इसके अतिरिक्त अपनी बुद्धिमता से आप समाज में विख्यात होंगी।

श्रुतकलाबलनिर्मलवृतयः कुसुमगंध जलाशयकेलयः।

किल नरास्तु कुलीरगते विधौ वसुमतीसुमती स्मितलब्धयः।
जातकाभरणम्

आप पूर्ण रूप से पति को वश में रखेंगी। आपके समस्त मित्र सद्गुणों से युक्त होंगे तथा जलविहार करना आपका प्रिय शौक होगा। आप बहुत से भवनों के निर्माता होंगी अथवा बहुत से मकानों की स्वामिनी भी बन सकती हैं। आपका कद भी मध्यम रहेगा तथा वक्रगति से शीघ्र चलना आपको रूचिकर लगेगा। साथ ही संतति में पुत्रों की संख्या भी आपकी अल्प ही रहेगी।

स्त्रीनिर्जितः पीनगलः सन्मित्रो वहवालयास्तुकट्यिर्धनाढ्यः।
ह्रस्वश्च वक्रो द्रुतगः कुलीरे मेधान्वितस्तोयरतोऽल्प पुत्रः।।
फल दीपिका

आप अपने जीवन में नाना प्रकार की सुखसम्पतियों का उपभोग करने वाली होंगी तथा ज्योतिष शास्त्र की आप ज्ञाता एवं श्रद्धालु रहेंगी तथा स्वभाव से भी सुशील रहेंगी। आप अपने सम्पूर्ण जीवन में चन्द्रकलाओं के समान क्षय वृद्धि को प्राप्त करती रहेंगी अर्थात् जीवन उतार चढाव से संघर्ष पूर्ण रहेगा। आप स्नेहाभिभूत होकर ही वश में की जा सकेंगी। दबाव या बलपूर्वक आपसे कोई कार्य नहीं करवाया जा सकेगा। मित्रों को आप पूर्ण आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगी फलतः मित्रों के प्रिय रहेंगे। आपकी रूचि जीवपालन, उद्यान तथा जलाशयादि के निर्माण में निरन्तर रहेगी।

आवक्रद्रुतगः समुन्नतकटिः स्त्रीनिर्जितः सत्सुहृद्।
देवज्ञा प्रचुरालयः क्षयधनैः सयुंज्यतेः चन्द्रवत्।।
ह्रस्वः पीनगलः समेति च वशं साम्ना सुहृदवत्सलः।
तोयोद्यानरतः स्ववेश्मसहितै जातः शशाळङ्कैः नरः।।
बृहज्जातकम्

आप हमेशा सौभाग्य से युक्त रहेंगी तथा समस्त कार्यों को धैर्यपूर्वक सम्पन्न करेंगी। साथ ही घर के सुख को प्राप्त करने में भी आप सफल रहेंगी। लेकिन आप अधिकांश समय भ्रमण तथा यात्रा पर ही रहेंगी। आपका लोगों से विनम्रता का व्यवहार रहेगा। फलतः सभी लोग आपकी प्रशंसा करेंगे। सैक्स की प्रबलता से भी आप युक्त रहेंगी तथा उपकार करने वालो की आप पूर्ण कृतज्ञ रहेंगी। आप अपनी योग्यता तथा बुद्धिबल से राज्य में किसी भी उच्चाधिकार प्राप्त पद को सुशोभित करने में सक्षम रहेंगी। आप प्रयत्न पूर्वक सत्य तथा प्रियवाणी का प्रयोग करेंगी जो अन्य जनों को रूचिकर लगेगी।

युक्तः सौभाग्ययोग्यैगृह सुहृदरटन ज्यौतिषज्ञान शीलैः।
कामासक्तकृतज्ञः क्षितीपतिसचिवः सत्प्रमाण प्रवासी।।
सोन्मादः केशकल्पो जलकुसुमरुचि र्हानिवृद्धयानुयातः।
प्रासादोद्यानवाणीप्रियकरणरतः पीनकण्ठः कुलीरे।।
सारावली

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आप कभी कभी अधिक बोलेंगी। साथ ही दया एवं करूणा का भाव भी आपके हृदय में अल्प ही रहेगा साहसिक कार्यों को करने में आप सफल रहेंगी। छोटी छोटी बातों में कोध करना तथा उत्तेजित होना आपके स्वभाव का अंग होगा। अपने कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए आप किसी भी कार्य को करने के लिए तत्पर रहेंगी। साथ ही आपकी प्रवृति विवाद युक्त होगी अतः अन्य जनों से आपका वैमनस्य का भाव चलता रहेगा। अतः संयमपूर्वक अन्य जनों से वार्तालाप करना चाहिए।

आप उन्माद तथा प्रमेह से भी ग्रसित हो सकती हैं। आपका चेहरा सामान्य सुन्दर होगा तथा कटु शब्दों का आप कभी कभी प्रयोग करेंगी जिससे श्रोता आपसे प्रसन्न नहीं होंगे। अतः आपको मधुर शब्दों का यत्नपूर्वक प्रयोग करना चाहिए।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही कोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगडू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

मार्जार योनि में पैदा होने के कारण आप वीरता के गुणों से युक्त रहेंगी तथा अपने कार्यों को निपुणता से सम्पन्न करेंगी। आप मिष्ठान भोजन तथा मधुर पेय के अति शौकीन होंगी तथा इनके प्रयोग से आप प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी। आप की प्रवृति निर्भीक होगी तथा बिना किसी भय के आप अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगी। परन्तु कभी कभी आपके स्वभाव में कुटिलता या दुष्टता का समावेश हो जाएगा। अतः आपकी प्रवृति कठोरकर्मो की ओर प्रेरित होगी।

शूरः स्वकार्येदक्षश्च मिष्ठानपान भक्षकः।
निर्भयो दुस्वभावश्च नरो मार्जार योनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मार्जार योनि में उत्पन्न बालक वीर, अपने कार्यों को निपुणता से करने वाला, मिष्ठानपान भक्षण प्रेमी तथा दुष्ट स्वभाव वाला होता है।

आप के जन्म समय में चन्द्रमा लग्न में विद्यमान हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से उन्हें लम्बी आयु की प्राप्ति होगी। आपके जन्म के उपरान्त वे धन सम्पत्ति को भी प्राप्त करने में सफल होगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह एवं वात्सल्य रहेगा तथा जीवन के सभी शुभ एवं महत्व पूर्ण कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। इसके साथ ही आप के परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं मतभेदों की प्रायः अल्पता ही रहेगी।

आप भी उनके प्रति मन में पूर्ण सम्मान तथा आदर का भाव रखेंगी तथा उनकी

आज्ञा पालन करने के लिए प्रायः तत्पर रहेंगी। इससे आप लोगों का एक दूसरे के प्रति विश्वास आदि में वृद्धि होगी जिससे आजीवन मधुर संबंध बने रहेंगे। इससे आप परस्पर सहयोग भाव से जीवन में प्रसन्नता की प्राप्ति करेंगी।

आपके जन्मकाल में सूर्य तृतीय भाव में हैं अतः आपके पिता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं शारीरिक अस्वस्थता अल्प मात्रा में ही रहेगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव रहेगा तथा जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको अपना पूर्ण सहयोग अर्जित करेंगे। आपके शक्ति साहस एवं पराक्रम में वृद्धि करने के लिए वे नित्य आपको प्रोत्साहित करते रहेंगे। धन सम्पत्ति का भी उनके पास अभाव नहीं रहेगा। साथ ही वांछित आर्थिक सहायता भी आप उनसे प्राप्त करती रहेंगी।

आपके हृदय में भी उनके प्रति सम्मान का भाव रहेगा तथा अवसरानुकूल आप उनकी आज्ञा का पालन करती रहेंगी। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु कभी कभी मतभेद के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा लेकिन यह अल्प समय के लिए ही रहेगा। इसके साथ ही जीवन में पूर्ण रूप से उनकी सेवा तथा सहयोग करना आप अपना कर्तव्य समझेंगी एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगी।

आपकी जन्म कुण्डली में मंगल की स्थिति चौथे भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा वे शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा तथा सुख दुःख में आपको हमेशा उनसे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार का सहयोग प्राप्त होता रहेगा। साथ ही व्यापार एवं आजीविका संबंधी कार्यों में भी वे आपकी पूर्ण सहायता करेंगे।

आप भी उनको मन से सम्मान एवं स्नेह प्रदान करेंगी तथा सुख दुःख में सर्वदा उनके साथ रहेंगी एवं यथाशक्ति उनको वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता भी प्रदान करती रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण संबंधों में कटुता या तनाव आएगा परन्तु कुछ समय के बाद स्थिति सामान्य हो जाएगी। साथ ही आप एक दूसरे से सहमत भी रहेंगे एवं विश्वास पूर्वक जीवन में परस्पर सहयोग का भाव रखेंगे।

आपके लिए पौष मास, द्वितीया, सप्तमी तथा द्वादशी तिथियां, अनुराधा नक्षत्र, व्याघात योग, नागकरण, बुधवार, तृतीय प्रहर तथा मीन राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फल देने वाले होगे। अतः आप 15 दिसम्बर से 14 जनवरी के मध्य 2,7,12 तिथियों तथा उपरोक्त योगों में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न न करें। अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही इन दिनोंमें शारीरिक सुरक्षा का भी पूर्ण ध्यान रखें। यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्ति में बाधा उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट शंकर भगवान को नित्य शिवालय जाकर विल्वपत्र चढाने चाहिए तथा सोमवार के उपवास रखने चाहिए। साथ ही श्वेत मोती, श्वेत वस्त्र, चांदी, श्वेत पुष्प, चावल आदि पदार्थो का दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त चन्द्रमा के तांत्रीय मंत्र के कम से कम

10000 जप सम्पन्न करने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों के प्रभाव में कमी होकर शुभ फलों की प्राप्ति होगी।

ऊँ श्रां श्रीं श्रों सः चन्द्रमसे नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं सोमाय नमः।